अमृत काल में भारतः संभावनाएं और चुनौतियां

डॉ0 राकेश ठाकुर
राजनीति विज्ञान
तिलकामांझी भागलपुर विश्वविद्यालय,
भागलपुर, बिहार
ईमेलः rakeshraj33061@gmail.com

सारांश

किसी भी राष्ट्र का गौरव तभी जाग्रत रह सकता है जब वह अपने स्वाभिमान एवं गौरवशाली परंपराओं को अगली पीढ़ियो में स्थानांतरित करता है, सांस्कारित करता है एवं निरंतर रूपेण प्रेरित करता है। राष्ट्र गौरव को जाग्रत करते हुए एवं स्वाधीनता के महत्व को रखते हुए भारत को विकसीत देशों की अग्रणी स्थान पर लाने की यही परिकल्पना सामर्थयशाली भारत अपने स्वतंत्रता के 78वीं वर्षगांठ पूर्ण कर अपने अमृत काल में प्रवेश कर आपार एवं असीमित संभावनाओं को आमंत्रित कर रहा है। वर्तमान परिद्दश्य में भारत प्रचुर एवं प्रबल संभावनाओं के देश के रूप में परिलक्षित है। अमृत काल का सदुपयोग कर भारत के लक्ष्य को आगे बढ़ाने में प्रत्येक नागरिक को पारस्परिक सहयोग की आवश्यकता है। परंतु बहुत सारे ऐसे कारक हैं जो प्रगति की राह में चुनौतियां गंभीर हैं, परंतु वह भी सत्य है कि अमृत काल के अंतर्गत निर्धारित लक्ष्यों को पूर्ण करने तथा भारत के गौरव वापस पाकर आत्मनिर्भर भारत बनाने की योजना महज कल्पना नहीं, अपितु तर्कसंगत परिस्थितियों पर आधारित सुविचार की कल्पनाा है।

मुख्य शब्द

अमृत काल, आत्मनिर्भर भारत, मेक इन इंडिया, कंज्यूम इन इंडिया, वोकल फॉर लोकल, कोविड–19, इनिशिएटिव कौशलयुक्त शिक्षा, विदेशी निवेशक, समृद्धमय, सांस्कृतिक विरासत, मृर्त्योमा अमृतंगमय।

Reference to this paper should be made as follows:

Received: 25.01.2025
Approved: 21.03.2025

डॉ0 राकेश ठाकुर

अमृत काल में भारतः संभावनाएं और चुनौतियां

RJPP Oct.24-Mar.25,
Vol. XXIII, No. I,
Article No. 13
Pg. 105-110

Online available at:
https://anubooks.com/journal-volume/rjpp-sept-2025-vol-xxiii-no1

डॉ0 राकेश ठाकुर

प्रस्तावना

भारत की स्वतंत्रता की गौरवशाली 78वीं वर्षगांठ पूर्ण कर आजादी के अमृत महोत्सव मना रहा है। आजादी किसी भी देश का, वहां के नागरिकों का सबसे बड़ा सपना होता है क्योंकि इस आजादी से हमें अपने संसाधनों का अपने मुताबिक इस्तेमाल करने का अधिकार मिलता है, समाज के मन मुताबिक जीने का हक और देश को अपने नजरिए से सर्वांगिण विकास का रास्ता चुनने का अवसर मिलता है। भारत को विकसीत देशों की श्रेणी में अग्रणी स्थान पर लाने की यहीं परिकल्पना अमृत काल में प्रवेश कर चुके हमारे राष्ट्र भारत का मुख्य ध्येय है एवं इसे पूर्ण करने में न केवल आपार संभावनाएं हैं, प्रत्युत कई सारी चुनौतियां भी हैं, जिन्हें हम सामूहिक प्रयासों के द्वारा मूर्त रूप प्रदान कर निर्धारित लक्ष्य तक पहुँच सकते हैं। जिस प्रकार एक दीपक अपने प्रकाशपुंज से आसपास के अंधेरे को क्षीण कर देता है, ठीक उसी मात्र एक संकल्प लाखों संकल्पों को प्रस्फुटित कर सकता है। बस आवश्यकता है हमारे संकल्पों को साहसिक एवं सामूहिक प्रयत्नों द्वारा मूर्त रूप प्रदान करने की। इसी दिशा में प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी द्वारा "अमृत काल" शब्द का प्रयोग सर्वप्रथम 2021 में 75वें स्वतंत्रता दिवस समारोह के दौरान लाल किले के प्राचीर से किया गया, जिसके अर्न्तगत उन्होंने आगामी 25 वर्षों के लिए के देश के लिए एक नए विजन एवं विस्तृत रोडमैप का अनावरण कर भारत के नागरिकों के जीवन में सुधार करना, गाँवों और शहरों के विकास के विभाजन को कम करना, लोगों के जीवन में सरकार के नागरिकों के हस्तक्षेप को कम करना और नवीनतम तकनीक का स्वागत कर नए एवं सशक्त भारत के निर्माण करने पर जोर दिया है। यह तभी संभव है, जब सामूहिक रूपेण जन–जन की भागीदारी सुनिश्चित हो।

आजादी के अमृत काल में नए विचारों के अमृत, नए संकल्पों के अमृत और आत्मनिर्भरता के अमृत का पान कर **"मृत्यमा अमृतं गमय"** की अवधारणा को आत्मसात् करने हेतु दृढसंकल्पित हैं। आजादी के अमृत काल में जहां एक ओर हमारी जाग्रत आँखों से देखे गए स्वप्नों को साकार करने का विश्वास है तो वहीं दूसरी ओर जीवन परक मूल्यों को सुरक्षित करने एवं नया सशक्त भारत निर्मित करने का आयाम और स्वतंत्र चेतना का एहसास है। आजादी का अमृत काल मौजूदा पीढ़ी को उन सपनों, आशाओं, आकांक्षाओं तथा अपेक्षाओं को पूर्ण करने का साहस प्रदान करते हुए **"स्वयमेव मृगेन्द्रिता"** की धारणा को प्रबल करेगा।

अमृत काल का शाब्दिक अर्थ एवं ध्येय

वस्तुतः अमृत काल एक वैदिक ज्यौतिष शब्द है, जिसका तात्पर्य कोई नया उद्यम शुरू करने के लिए सही प्रतीक से है। यह वह समय है जब उचित प्रयासों से बड़ी सफलता प्राप्त की जा सकती है। इसी अवधारणा एवं तथ्य को ध्यान में रखते हुए प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने भारत के अमृत काल में अगले 25 वर्ष की यात्रा हेतु प्रत्येक देशवासियों से पंच प्रण का आह्वान किया है, जिसके अन्तर्गत (1) विकसीत भारत (2) गुलामी की प्रत्येक सोच से मुक्ति (3) विरासत पर गर्व (4) एकता व एकजुटता एवं (5) नागरिकों द्वारा, अपने कर्तव्यों का पालन निहित है। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने हमारे राष्ट्र के 140 करोड़ नागरिकों के सपनों को देखकर और उनके संकल्पों की अनुभूति को साकार करने के उद्देश्य से आगामी 25 वर्ष के लिए देश को पंच प्रण का पालन कर अपनी शक्ति, अपने संकल्पों और

अपने सामर्थ्यों को केन्द्रित कर वर्ष 2047 तक समर्थ भारत बनाने का प्रण लिया है। आज से 25 वर्ष पश्चात जब देश आजादी के 100 वर्ष पूर्ण होने का जश्न मना रहा होगा, तब हमारा राष्ट्र प्रत्येक क्षेत्र में अग्रसर रहे। इसी विजन को ध्यान में रखकर यह खाका तैयार किया गया है।

अमृत कालीन भारत में प्रचुर संभावनाएं

हमारा सामर्थ्यशाली भारत अपने स्वतंत्रता की 78वीं वर्षगाँठ पूर्ण कर अपने अमृत काल में प्रवेश कर आपार एवं असीमित संभावनाओं को आमंत्रित कर रहा है। अमृत काल में भारत नई संभावनाओं के साथ प्रवेश किया है एवं वैश्विक महामारी कोरोना का जिस तरह से हमारे देश की सरकार, वैज्ञानिकों और डॉक्टरों ने मुकाबला किया है। उसकी दुनिया भर में सराहना की जा रही है। एक वर्ष के भीतर कोरोना टीका विकसीत कर एवं एक अरब लोगों को लगाकर भारत दुनिया को अपने सामर्थ्य और प्रबंधन की क्षमता का अप्रतिम उदाहरण प्रस्तुत किया है। रक्षा क्षेत्र से लेकर विकास के अन्यान्य क्षेत्रों में जिस तरह तेजी से आज आत्मनिर्भरता की ओर अग्रसर हो रहा है, उससे दुनिया के कई देश हैरान और परेशान हैं। वास्तव में भारत एक शुप्त महाशक्ति है। अगर भारत जाग्रत हो जाए तो सारे विश्व की अर्थव्यवस्था को गहरे एवं दीर्घकालीन रूप में प्रभावित कर सकता है।

वर्तमान परिदृश्य में, भारत प्रचुर एवं प्रबल संभावनाओं का देश के रूप में परिलक्षित है एवं भारत के समक्ष विशाल पैमाने पर कुशल और दक्ष युवा मानव संसाधन उपलब्ध है, जो संख्या की दृष्टि से संपूर्ण विश्व में सर्वाधिक 4 जिसका उचित उपयोग हम शिक्षा, स्वास्थ्य, कृषि और शासन में बड़े पैमाने पर कर सकते हैं। साथ ही रोजगारों, उच्च उत्पादकता, उच्च राष्ट्रीय विकास, कमजोर वर्गों के सशक्तिकरण, समन्वित तथा पारदर्शी समाज और ग्रामीण सामृद्धि में भी सकार सकारात्मक रूप से संभावनाएं विद्यमान हैं। अमृत काल का सदुपयोग कर विकसित भारत के लक्ष्य को आगे तक बढ़ाने के लिए प्रत्येक नागरिक के पारस्परिक सहयोग की आवश्यकता है। प्रज्वलित युवा मस्तिष्क किसी भी लक्ष्य प्राप्ति हेतु शक्तिशाली इंजन की भाँति कार्य करते हैं युवा का अदम्य उत्साह, राष्ट्र निर्माण की क्षमता और रचनात्मक नेतृत्व भारत को प्रतिस्पर्धात्मक लाभ और विश्व में सही स्थान प्रदान कर सकते हैं। इसके अतिरिक्त हमारे पास प्राकृतिक संसाधनों के रूप में भी अत्यंत संभावनाएं हैं, जिसका **"वोकल फोर लोकल"** के रूप में भारतीय उत्पादों को प्रोत्साहित करने की भी प्रबल संभावनाओं के तौरे पर प्रभाव पूर्ण तरीको से विपणन किया जा सकता है। जैव विविधता, पर्यटक प्राकृतिक मनोकारी स्थानों की प्रचुरता भी हमारे भारत की अप्रितम पहचान है। भारत जैसा विशाल लोकतांत्रिक देश किसी भी विकसीत देश को पछाड़ सकता है, बशर्ते यदि इसके लिए सभी भारतवासी मिलकर साथ चलें।

भारत के पास विशाल उर्वर भूमि हैं और हम अनाज उत्पादन में दूसरे तथा फल उत्पादन में पहले स्थान पर हैं। लेकिन उत्पादकता के संदर्भ में हम 45वें स्थान पर हैं। हमारे देश में नवीन खाद्य प्रसंस्करण प्रौद्योगिकियों के प्रयोग की पूर्ण संभावनाएं है, जिससे कृषि उत्पादों में मूल–संवर्धन होगा। जैव प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में विकास की संभावनाएं से स्वास्थ्य क्षेत्र में काफी सुधार हो सकता है। भारत के पास औषधीय जड़ी–बूटियों की असीमित सम्पदा है और जैव प्रौधोगिकीविदों को इन संसाधनों से मानव जाति के लिए उपयोगी बनाने के लिए इनका लाभ उठाने का प्रचुर अवसर है। सूचना प्रौद्योगिकी हमारी मुख्य क्षमताओं में से एक है और हमे उसे बड़े पैमाने पर विकसीत करने का प्रयत्न करना होगा।

कोविक–19 महामारी के संदर्भ में अमरीका जैसे धनी और शक्तिशाली देश समेत दुनिया के अन्यान्य देशों को भारत ने जो चिकित्सीय और औषधीय सहायता प्रदान की है, उसमें भारत की विश्व में प्रतिष्ठा बढ़ी है। चीन की शैतानियों के प्रत्युतर में भारत ने जिस अभूतपूर्व संयमपूर्ण द्वढ़ता और संकल्प–शक्ति का परिचय दिया है, वह पड़ोसियों के लिए एक साफ संदेश है कि और इसका व्यापक असर होना अवश्यभावी है। विश्व के बदलते कुटनीतिक समीकरणों के बीच भारत अपनी कुटनीतिक परीक्षा देकर नए समीकरणों का आगाज कर चुका है। अभी तक की स्थितियां में हमें यह आश्वस्त करती है कि भारत सरकार के कदम सही दिशा में बढ़ रहे हैं। आर्थिक शक्ति सामरिक शक्ति की बुनियाद होती है। इस प्रकार अपनी आर्थिक स्थिति सुखद करते हुए देशवासियों की रक्षा और अपनी सीमाओं की अस्मिता अक्षुण रखने के लिए उपयुक्त और प्रर्याप्त आयुधों पर हमें आगे बढ़ने की जरूरत है और इस दिशा में प्रबल संभावनाएं हैं।

वर्तमान में भारत विश्व की पाँचवी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था वाला देश बन चुका है और इसके आगे मात्र अब अमरीका, चीन, जापान और जर्मनी है। भारत ने पिछले 10 वर्षो में अद्भुत आर्थिक विकास दर हासिल की है। जहां एक दशक पहले भारत दुनिया की 11वीं सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था था वहीं अब ये 6 स्थान आगे बढ़कर 5वें स्थान पर विराजमान है, जो भारत के क्रमानुक्रमिक विकास की संभावनाओं को बयां करता है।

अमृत कालीन भारत की चुनौतिया

हैरिएट टबमैन के शब्दों में "हर महान कार्य एक सपने देखने के साथ शुरू होता है। यदि आपके पास साहस और धैर्य है? तो यकीनन आप दुनिया बदल सकते हैं" चुनौतियां हमेशा रहेगी लेकिन यह हम पर निर्भर करता है कि हम प्रगति तथा विकास के लिए उन्हें अवसरों में कैसे बदलते हैं। एक तरफ जब कोविड जैसी वैश्विक महामारी से सम्पूर्ण विश्व अभी तक उबर नहीं पाया है तो वहीं वर्तमान में, रूस–यूक्रेन संघर्ष के हालात सर्वविदित है। वर्तमान हलातों में अमृत काल में प्रवेश कर चुके भारत आगामी 25 वर्षो में भारत की प्रगति के लिए कई ऐसे कारक विद्यमान हैं जो प्रगति की राह में विषम चुनौतियां खड़ी कर सकते हैं अथवा कर रहे हैं। इन्हें निम्न प्रकार विवेचित किया जा सकता है।

किसी भी राष्ट्र के विकास का मूल आधार आर्थिक ढांचा ही होता है जो अन्य सामाजिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक ढांचे को आकार प्रदान करता है। परंतु वर्तमान परिदृश्य में भारतीय मुद्रा का अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर विचलित होने से हमारे लक्ष्य को व्यवधान पहुँचा सकता है एवं हमारे समक्ष प्रमुख चुनौती है।

वर्तमान परिदृश्य में भारत की विदेश नीति प्रबंधन को बेहतर माना जा सकता है, हाल ही में अमरीका ने अपनी नई राष्ट्रीय सुरक्षा नीति रणनीति में भारत को वैश्विक शक्ति का दर्जा दिया है। अमरीका का मानना कि भारत अब बदल रहा है। इसलिए, भारत को एक और कई मंचों पर इसका प्रभाव स्पष्ट रूप में देखा जाना चाहिए। विभिन्न अंतर्राष्ट्रीय मंचों पर भारत की स्वीकृति लगातार बढ़ती जा रही है। अमरीका के अलावा कई अन्य देश भी अब भारत को एक उभरती हुई महाशक्ति के रूप में देखने लगे हैं और भारत की नीतियों–रणनीतियों पर उनकी निगाहें लगी रहती है। परंतु अपने विदेशी प्रतिद्वंद्वियों यथा पाकिस्तान एवं चीन के चालबाजियों से हमें एक द्वढ़ एवं सशक्त रणनीति निर्मित करने की आवश्यकता है।

देश में शिक्षा व्यवस्था की चुनौती का विशाल एवं व्यापक क्षेत्र है, साथ ही उत्कृष्ट संस्थानों से हर वर्ष निकलने वाले लाखों छात्रों में कौशल की बेहद कमी है और अन्तर्राष्ट्रीय मानकों पर बेहद कमजोर माना जाता है इन्हीं तथ्यों को ध्यान में रखकर भारत सरकार द्वारा कौशल विकास जैसी योजनाओं का प्रादुर्भाव किया गया है। अगले दो दशकों तक कुशल श्रम की आवश्यकता को पूरा करने के लिए 15 लाख लोगों को विशिष्ट शिक्षा और प्रशिक्षण उपलब्ध कराने की आवश्यकता होगी। पारम्परिक शिक्षा नीतियों के साथ ऐसा करना संभव नहीं होगा। अतः अगले 25 वर्षों में कौशल युक्त शिक्षा उपलब्ध कराना प्राथमिक चुनौती होगी। साथ ही हमें बढ़ती जनसंख्या के संकेत पर भी एक निगाह रखनी चाहिए, क्योंकि इसमें वृद्धि गुणवत्ता में कमी को प्रेरित करेगी।

भारत में विदेशी निवेशकों को आकर्षित करने हेतु घरेलू चुनौतियों से हर हाल में पार पाना होगा। भारतीय उद्योगों, उद्यमियों और निवेशकों को, विश्व की सबसे तेजी से बढ़ती अर्थव्यवस्था की बाधाओं को पहचानना होगा। दहाई अंकों में विकास दर हासिल करने के लिए विकास कार्यों को रफ्तार देनी होगी। साथ–ही बड़ी–छोटी परियोजनाओं को समय पर पूरा करना होगा, जो सबसे बड़ी चुनौति है। आर्थिक भविष्य को सुदृढ़ करने और 10 खरब डॉलर की की अर्थव्यवस्था बनाने के लिए 25 वर्षों तक जीडीपी दर को 9 प्रतिशत बनाए रखना सबसे प्रमुख चुनौती होगा। इससे कम विकास दर के साथ भारत को अपने आर्थिक और सामाजिक भविष्य को सुरक्षित करने में कठिनाइयां पेश हो सकती है। देश में तेजी से बढ़ती जनसंख्या के साथ इस विकास दर को बनाए रखना अगले 25 वर्षो तक प्रतिवर्ष 10–12 लाख रोजगार के अवसर बनाने की जरूरत होगी एवं रोजगार उपलब्ध कराना आज के अमृत काल में सर्वाधिक प्रमुख चुनौती हैं।

किसी देश के लिए विकास का इंजन उसके उद्योग–धन्धे अर्थात विनिर्माण क्षेत्र के ऊपर आश्रित होता है। आज भारत विनिर्माण के क्षेत्र में **"मेक इन इंडिया"** जैसी इनिशिएटिव माध्यम से बूमिंग की स्थिति भले ही प्राप्त कर रहा है परंतु आने वाले समय में हमें नए बाजार की जरूरत होगी। निर्यात में और आगे बढ़ना होगा। जहां एक और प्रधानमंत्री की **"मेक इन इंडिया"** के बाद **"वोकल फॉर लोकल"** के रास्ते **"कंज्यूम इन इंडिया"** को अपनाकर **"आत्मनिर्भर भारत"** की योजना साकार कर सकते हैं तो वहीं दूसरी ओर नियात के नए बाजार का दोहन करके हम अपनी वैश्विक पहचान को और मजबूत कर सकते हैं, विदेशी मुद्रा का भंडार भी बढ़ा सकते हैं, बशर्ते कौशल विकास योजनाओं में तेजी लानी होगी ताकि कुशल श्रमिकों की माँग को पूर्ण कर सके।

निष्कर्ष

वर्तमान हालातों में बेशक चुनौतियाँ गंभीर हैं, परंतु यह भी सत्य है कि अमृत काल के अन्तर्गत निर्धारित लक्ष्यों को पूर्ण करने तथा भारत का गौरव वापस पाकर आत्मनिर्भर भारत बनाने की योजना' महज एक कल्पना नहीं, अपितु तर्कसंगत परिस्थितियों पर आधारित सुविचार की संकल्पना है एवं इसमें आपार संभावनाएं विद्यमान हैं, जिसके द्वारा विभिन्न योजनाओं, परियोजनाओं कार्यों को धैर्य के साथ आगे बढ़ाकर हम सभी बाधाओं एवं चुनौतियों को पार कर सकते हैं।

"आजादी का अमृत काल" सभी भारतवासियों के लिए एक स्वर्णिम काल है। जिसमें हम अपने अंदर के सुसुप्त शक्तियों को पहचान कर और उसे सकारात्मक दिशा में जाग्रत कर तथा

चुनौतियों को सहर्ष स्वीकार कर नया सशक्त भारत निर्माण की और प्रस्थान कर सकते हैं। भारत के समक्ष गर्व करने के लिए अथाह भंडार है, समृद्वमय इतिहास हैं, चेतनामय सांस्कृतिक विरासत भी उपलब्ध है, जो हमें ऊँची उड़ान भरने के लिए शक्तिशाली आत्म विश्वास रूपी पंख प्रदान करता है। जिसका प्रयोग कर हम विश्व के सिरमौर बनने की क्षमता रखते हैं एवं अमृत काल की अवधि में महत्वपूर्ण लक्ष्यों को प्राप्त कर जब भारत 2047 में अपनी आजादी के 100 वर्ष पूर्ण कर अमृत काल का जश्न मनायेगा तो, निश्चय ही भारत अपने अमृतकालीन लक्ष्यों को पूर्ण कर विश्व का नेतृत्व कर रहा होगा।

संदर्भ

1. आकाशवाणी समाचार भारती, वर्ष 2021, पृ० सं०–**70, 73**
2. @mnt/media_rw/4A9F-180F/AmritKall@hindi_bhashi_lekh3_2011_22.pdf
3. उड़ान मार्च,2022
4. प्रतियोगिता दर्पण / जनवरी / 2022 / पृ० सं०–**161,162,180**
5. https://www.downtoearth.org.in
6. https://hi.m.wikipedia.org
7. https://www.weforum.org/impact/ai-for-gagriculture-in-india/
8. https://timesofindia.indiatimes.com/for-amrit-Kaal
9. https://www.lokmatnews.in/india/azadi-ka-amrit-mahotsav-three-biggest-challenges-ahead-of-india-b408/